



॥ श्री राधाष्टमी व्रत पूजा विधि ॥

॥ श्री राधे राधे ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री राधाष्टमी व्रत पूजा विधि ॥

राधाष्टमी हिंदू धर्म का एक अत्यंत पवित्र और शुभ पर्व है। यह भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन वृषभानु नंदिनी, श्रीकृष्ण की परम प्रिया एवं प्रेम-भक्ति की अधिष्ठात्री श्री राधा रानी का अवतरण हुआ था। मान्यता है कि इस दिन श्रद्धा और भक्ति के साथ राधाष्टमी व्रत एवं पूजा करने से श्री राधा-कृष्ण की विशेष कृपा प्राप्त होती है तथा जीवन में प्रेम, सुख, शांति और आध्यात्मिक उन्नति का आशीर्वाद मिलता है।

राधाष्टमी व्रत का महत्व

राधाष्टमी का व्रत भगवान श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त करने का सर्वोत्तम माध्यम माना गया है। शास्त्रों के अनुसार श्रीकृष्ण तक पहुँचने का सरल मार्ग श्री राधा की भक्ति है। जो भक्त राधा रानी की आराधना करता है, उस पर श्रीकृष्ण भी शीघ्र प्रसन्न होते हैं। यह व्रत दांपत्य सुख, मनोकामना पूर्ति, पारिवारिक सुख-समृद्धि तथा निष्काम भक्ति की प्राप्ति के लिए अत्यंत फलदायी माना जाता है।

पूजा सामग्री

श्री राधा-कृष्ण की प्रतिमा या चित्र ,लाल अथवा गुलाबी वस्त्र
चौकी एवं स्वच्छ वस्त्र ,गंगाजल,पंचामृत,चंदन
,रोली एवं कुमकुम,अक्षत (चावल),ताजे पुष्प एवं पुष्पमाला धूप,
दीप एवं घी का दीपक,माखन-मिश्री,खीर, फल एवं मिठाई
नारियल,पान, सुपारी, लौंग, इलायची,दक्षिणा
आरती की थाली

व्रत का संकल्प

प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा स्थान को गंगाजल से शुद्ध करें तथा राधा-कृष्ण की प्रतिमा स्थापित करें।

"मैं (अपना नाम) श्रद्धा एवं भक्ति के साथ श्री राधाष्टमी व्रत का पालन कर रहा/रही हूँ। हे श्री राधा रानी! कृपया मेरी पूजा स्वीकार करें तथा मुझे निष्काम भक्ति, प्रेम, सुख, शांति और श्रीकृष्ण की कृपा प्रदान करें।"

राधाष्टमी पूजा विधि

1. गणेश वंदना

सर्वप्रथम भगवान श्रीगणेश का स्मरण करें।

ॐ गं गणपतये नमः॥

2. कलश स्थापना

पूजा स्थल पर कलश स्थापित करें और भगवान विष्णु तथा सभी देवताओं का ध्यान करें।

3. राधा-कृष्ण का आवाहन

हाथ जोड़कर श्री राधा-कृष्ण का ध्यान करें।

ॐ श्री राधिकायै नमः।

ॐ श्रीकृष्णाय नमः॥

4. अभिषेक

यदि प्रतिमा हो तो पंचामृत एवं गंगाजल से अभिषेक करें। तत्पश्चात स्वच्छ जल से स्नान कराकर वस्त्र एवं आभूषण अर्पित करें।

5. श्रृंगार

राधा रानी को चंदन, कुमकुम, पुष्प, माला एवं सुंदर वस्त्र अर्पित करें।

श्रीकृष्ण को चंदन, पुष्प एवं तुलसी दल अर्पित करें।

ध्यान रखें कि तुलसी दल केवल भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित किया जाता है, राधा रानी को नहीं।

6. भोग

राधा-कृष्ण को माखन-मिश्री, खीर, फल, पेड़ा, मेवा तथा अन्य सात्विक प्रसाद अर्पित करें।

7. मंत्र जप

न्यूनतम एक माला (108 बार) निम्न मंत्र का जप करें—

॥ ॐ श्री राधिकायै नमः ॥

या

॥ ॐ ह्रीं श्रीं राधिकायै नमः ॥

8. स्तोत्र एवं भजन

पूजा के समय निम्न का पाठ करना अत्यंत शुभ माना जाता है—

श्री राधा चालीसा

श्री राधा अष्टकम्

श्री राधा स्तोत्र

राधा कृपा कटाक्ष स्तोत्र

राधा-कृष्ण नाम संकीर्तन

9. आरती

श्रद्धापूर्वक श्री राधा-कृष्ण की आरती करें और घंटी बजाकर भक्ति भाव से आरती गाएँ।

10. क्षमा प्रार्थना

पूजा के अंत में विनम्र भाव से प्रार्थना करें—

हे श्री राधा रानी! यदि मेरी पूजा, जप, स्तुति अथवा सेवा में किसी प्रकार की त्रुटि हुई हो तो कृपया उसे क्षमा करें। मुझे सदैव अपने श्रीचरणों की भक्ति और श्रीकृष्ण प्रेम प्रदान करें।

व्रत पारण

राधाष्टमी व्रत का पारण अगले दिन या अपनी परंपरा के अनुसार अष्टमी तिथि समाप्त होने के बाद किया जाता है। पारण से पहले भगवान को भोग अर्पित करें, ब्राह्मण या जरूरतमंद को दान दें तथा प्रसाद ग्रहण करके व्रत पूर्ण करें।

राधाष्टमी व्रत के नियम

पूरे दिन सात्विक आहार ग्रहण करें या सामर्थ्य अनुसार निर्जल/फलाहार व्रत रखें।

क्रोध, असत्य, कटु वचन और नकारात्मक विचारों से दूर रहें।

श्री राधा-कृष्ण के नाम का अधिक से अधिक स्मरण करें।

गौ सेवा, दान-पुण्य तथा जरूरतमंदों की सहायता करें।

ब्रह्मचर्य एवं मन की पवित्रता बनाए रखें।

राधाष्टमी व्रत के लाभ

श्री राधा-कृष्ण की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

प्रेम, भक्ति और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है।

दांपत्य जीवन में मधुरता एवं सौहार्द बढ़ता है।

परिवार में सुख, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

मन की शांति, मानसिक संतुलन तथा ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना विकसित होती है।

भक्त की मनोकामनाएँ पूर्ण होने और जीवन की बाधाओं के दूर होने की मान्यता है।

राधे राधे जय श्री राधे।

जय श्री राधे कृष्ण।